बाइबल टीचर

वर्ष 20 | मई 2023 | अंक 6

सम्पादकीय

कलीसिया उद्धार नहीं करती

प्रभु यीशु इस संसार में उद्धारकर्त्ता बनकर आया था। प्रेरित पौलुस ने अपनी यात्राओं में कलीसिया के बारे में बहुत कुछ लिखा है। कोरिन्थ में कलीसिया को उसने बहुत सारे पत्र लिखे, (1 कुरि. 1:2)। गलतियों की कलीसिया (गल. 1:2), थिस्सलुनीके में कलीसिया (1 थिस्स. 1:1) इत्यादि। पौलूस इन सब स्थानों पर पत्र लिखकर मसीहीयों को समझाता था कि उन्हें किसी प्रकार से मसीहीयत में आगे बढ़ना है और यह ऐसे लोग थे जिन्होंने बपतिस्मा लेकर मसीह को पहिन लिया था। (गलतियों 3:27) इन लोगों ने उसके राज्य अर्थात कलीसिया में प्रवेश पाकर नया जन्म प्राप्त किया था। (यूहन्ना 3:3-5)। यह लोग संसार से अलग किये हुए लोग थे। (1 कुरि. 1:2) प्रेरितों 2:47 में हम पढ़ते है कि उद्धार पाये हुए लोगों को प्रभु कलीसिया में मिलाता है। यह बात सच्च है कि कलीसिया उद्धार नही करती परन्तु उद्धार पाने के लिये कलीसिया में होना अति आवश्यक है।

वास्तव में बाइबल हमें बताती है कि हमारा उद्धार कुछ ऐसी बातों से होता है जिनका वर्णन हमें वचन में मिलता है। प्रेरित पौलूस ने कहा था कि तुम्हारा उद्धार अनुग्रह के द्वारा होता है। इस अनुग्रह को परमेश्वर ने मनुष्य पर अपने पुत्र यीशु के द्वारा दिखाया और यह अनुग्रह परमेश्वर की ओर से एक दान है। (इफि. 2:8)। हमारा उद्धार यीशु के द्वारा होता है क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि वह उसे मरियम के द्वारा इस संसार में भेजेगा ताकि वह लोगों को उनके पापों से मुक्ति दिला सके। (मत्ती 1:21)। अपने पुत्र यीशु को उसने जगत के उद्धार के लिये भेजा था। (यूहन्ना 3:16)।

यीशु का जीवन, उसका बलिदान भी हमें बचाता है। इसके विषय में हम पढ़ते है ''क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों

न पाऐगें। यानि यीशु के जीवन के कारण हमें उद्धार मिलता है। (रोमियों 5:10) एक और बड़ी आवश्यक बात यह है कि यीशु के लहु के द्वारा हम उद्धार पाते हैं तथा परमेश्वर के क्रोध से बचते हैं। (रोमियों 5:4)। हम सुसमाचार सुनकर और उसमें विश्वास लाकर कि यीशु मेरे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, कब्र में गाड़ा गया तथा तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)।

हमारा उद्धार विश्वास से भी होता है और इसी बात के विषय में पौलूस कहता है ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।'' (रोमियों 5:1)। याकूब कहता है कर्मों के द्वारा हमारा उद्धार होता है। (याकूब 2:24) परन्तु केवल विश्वास से उद्धार नहीं होता। बपतिस्मा एक ऐसी आज्ञा है जिसके मानने के द्वारा हमारा उद्धार होता है। बपतिस्में के विषय में प्रेरित पतरस ने कहा था कि बपतिस्मा हमें बचाता है। (1 पतरस 3:21)। और एक विशेष बात यह है कि हमारी आशा जो अनन्त जीवन प्राप्त करने की है वो हमें बचाती है। लिखा है ''आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए तो फिर आशा कहां रहीं? (रोमियों 8:24)।

कलीसिया मसीह द्वारा, बनाई गई उसकी मण्डली है, यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाया तथा इसके लिए अपना लोहू बहाया और अपने लोहू से इसे खरीदा है (मत्ती 16:18, प्रेरितों 20:28)। प्रेरित पौलूस हमें रोमियों 6:1-6 में बताता है कि किस प्रकार से बपतिस्में के द्वारा हम उसकी मृत्यु की समानता में जुड़ जाते हैं। प्रभु यीशु मसीह इस कलीसिया का सिर है। (कुल 1:18)। यह कलीसिया मसीह की आत्मिक देह है। कलीसिया यीशु के साथ जुडी हुई है। उसकी यह आत्मिक देह है। एक बड़ी अच्छी बात इसके विषय में पौलूस कहता है ''और सब कुछ उसके पांव तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणी ठहराकर कलीसिया को दे दिया और यह उसकी देह है, और उस की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' (इफि. 1:22-23)। इस देह यानि कलीसिया का वह एक दिन उद्धार करेगा। क्योंकि वह इसका मुखिया और उद्धार करने वाला है। उसने वायदा किया है कि वह अपनी कलीसिया का उद्धार करेगा। उद्धार पाने के लिये कलीसिया में होना आवश्यक है। हमें मसीह की आत्मिक देह में होना बहुत आवश्यक है। (गलतियों 3:27)। कलीसिया के प्रचारक या कुछ लोगों के पास कलीसिया का अधिकार नहीं है। यीशु ने अपने चेलों से कहा था ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।'' (मत्ती 28:18)। यीशु का राज्य उसकी कलीसिया है, और यह उद्धार पाये हुए लोगों से बनी हुई है। (प्रेरितो 2:47)। नूह ने बहुत बड़ा पानी का जहाज बनाया, जल प्रलय आने से पहिले वह और उसका परिवार उसके अन्दर जाकर जल प्रलय से बच गये और आज भी लोग बपतिस्मा लेकर जब कलीसिया में आ जाते हैं। तो उनका उद्धार होता है।

सच्चा धन

सनी डेविड

इस समय मैं आपका ध्यान उन बातों पर से हटाकर जो पृथ्वी पर की है, उन बातों पर दिलाना चाहता हूं जो स्वर्गीय है। इस संसार की उस महान पुस्तक बाइबल में लिखी बातों के ऊपर विचार करते है जो आज से हजारों वर्ष पूर्व परमेश्वर की प्रेरणा से रची गई थी। यह वह पुस्तक है जिसके भीतर परमेश्वर का वचन लिखा हुआ है। इस पुस्तक में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्य के ऊपर प्रकट किया है। परमेश्वर चाहता है कि उसकी इच्छा को जगत के सारे लोग जानें। और उसे मानकर उसके पास वापस लौट आएं। क्योंकि अपने पाप के कारण संसार के सब लोग परमेश्वर से दूर हैं। वे अपना जीवन उससे दूर और अलग रह कर व्यतीत करते हैं। और उसी स्थिति में रहकर वे मर जाते हैं, अर्थात् संसार से हमेशा के लिये उस अंधकार में चले जाते हैं जहां से कभी कोई वापस नहीं आता। जहां न परमेश्वर है, न छुटकारा है, परन्तु अनन्त विनाश का दण्ड है। लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हम सब अपना-अपना मन फिराकर उसकी इच्छा पर चलें, और न सिर्फ इस जीवन में परन्तु इस जीवन के बाद भी हमेशा उसके साथ रहें। पवित्र बाइबल में हमें यह उपदेश मिलता है, ''तुम न तो संसार से न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते है, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।'' (1 यूहन्ना 2 : 15-17)।

इसलिये, मित्रो, हमारे जीवन का उद्देश्य केवल खाना-पीना और सांसारिक वस्तुओं की खोज में लगे रहना ही नहीं होना चाहिए। परन्तु सबसे अधिक हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि क्या हम परमेश्वर की इच्छा पर चल रहे है या नहीं क्योंकि जब सब कुछ नाश हो जाएगा वह मनुष्य जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता रहता है सर्वदा बना रहेगा। परमेश्वर जानता है, कि हमें खाने-कपड़े तथा अन्य वस्तुओं की आवश्यकता है। उसने इन सब वस्तुओं को हमारे लिए बनाया है। परन्तु वह यह कदापि नहीं चाहता कि हम इन वस्तुओं को उसकी इच्छा से अधिक बढ़कर महत्व दें प्रभु यीशु ने उपदेश देकर कहा था, कि, ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, व एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; ''तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।'' इसलिए मैं तुम से कहता हूं'' प्रभु ने कहा, कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगें? और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?'' और प्रभु ने आगे कहा कि, ''आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते हैं, न काटते है और न खत्तों में बटोरते है; तो भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको

खिलाता है; क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? और वस्त्र के लिए क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते है, वे न तो परिश्रम करते न कातते है। तोभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था। इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो है अल्पविश्वासियों तुमको वह क्योंकर न पहिनाएगा? इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे? क्योंकि अन्य-जाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिए आज ही का दुख बहुत हैं'' (मत्ती 6: 24-34)।

मित्रो, आज हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें लगभग सभी मनुष्य संसार की वस्तुओं को प्राप्त करने में प्रयत्नशील हैं। प्रति-दिन हम किसी न किसी वस्तु की चिन्ता में रहते हैं। हमें न केवल वर्तमान की ही चिन्ता रहती है परन्तु उससे भी अधिक भविष्य की चिन्ता रहती है। न केवल हमें प्राप्त करने की चिन्ता रहती है, परन्तु जो हमारे पास है हमें उसकी सुरक्षा की भी चिन्ता रहती है। और सांसारिक चिन्ताओं के बोझ से हम इतने अधिक दबे रहते हैं कि हम अपना सिर उठाकर उन अनन्त महत्त्वपूर्ण वस्तुओं की ओर देख भी नहीं पाते जो सर्वदा बनी रहेंगी। हम नाशमान् शरीर की चिन्ता करते हैं, परन्तु अपनी अमर आत्मा को भूखा और नंगा रखते हैं। हम मिटनेवाले संसार की चिन्ता करते है, परन्तु अनन्त स्वर्ग की ओर कोई ध्यान नहीं देते। हम अपने आपको और मनुष्यों को प्रसन्न करने की चिन्ता करते हैं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा पर चलकर उसे प्रसन्न करने की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। कई हजार वर्ष हुए जबकि अय्यूब नाम के एक धर्मी मनुष्य ने लोगों के सामने यह प्रश्न रखा था, ''जब ईश्वर भक्तिहीन् मनुष्य का प्राण ले ले, तब यदि उसने धन भी प्राप्त किया हो, तोभी उसकी क्या आशा रहेगी?'' (अय्यूब 27:8)। और प्रभु यीशु ने कहा था, कि ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?'' (मत्ती 16:26)।

मित्रों, जगत में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु आपकी आत्मा है। और पाप के कारण वह परमेश्वर से दूर है, उससे अलग है। परमेश्वर पवित्रात्मा है। और मनुष्य को परमेश्वर ने अपने आत्मिक स्वरूप पर बनाया है। परन्तु मनुष्य ने पाप करके अपनी आत्मा को अपवित्र कर लिया हैं और अपने वचन की पुस्तक में परमेश्वर हमें बताता है, कि सब ने पाप किया है और सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु फिर परमेश्वर यह भी कहता है, कि उसके अनुग्रह से उस छूटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है हम सब धर्मी ठहराए जाते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने मसीह यीशु को उसके बलिदान के कारण हम सब के लिए एक प्रायश्चित ठहराया है। (रोमियों 3 : 23-25)। इसलिए पवित्र बाइबल में

लिखा है, कि ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6 : 23)। मृत्यु का अर्थ है, परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग होना। और अनन्त जीवन का अर्थ है हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ रहना। परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है। परन्तु परमेश्वर की आज्ञा मानकर वह फिर से उसके पास वापस आ जाता है। पवित्र शास्त्र का बुद्धिमान लेखक इसीलिए एक जगह लिखकर कहता है, ''कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है।'' (सभोपदेशक 12 : 13)।

मित्रो, अपने वचन की पुस्तक बाइबल में परमेश्वर हमें बताता है, कि उसने हमारे पापो का प्रायश्चित करने के लिए अपने पुत्र यीशु को जगत में भेज दिया। यीशु परमेश्वर का वचन था। परन्तु परमेश्वर ने उसे मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। और जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने एक बड़े ही अदभुत ढंग से उसे लेकर, मनुष्यों के हाथों से कूस पर चढ़वाकर बलिदान कर दिया। यूं परमेश्वर ने हम सबके पापों का प्रायश्चित किया। बाइबल में लिखा है कि यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित है। (1 यूहन्ना 4 : 10)। परन्तु पवित्र बाइबल में हमें यह उपदेश मिलता है, कि यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल केवल तभी होता है, जब हम यीशु में विश्वास लाकर अपना मन फिराते हैं, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं। एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिखा है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।''(गलतियों 3 : 26, 27)।

मित्रो, यह परमेश्वर का सुसमाचार है, जिसे उसने अपनी पुस्तक के द्वारा हम तक पहुंचाया है। उसने हमें बताया है कि हमारे लिये उसने क्या किया है। और वह हमें यह भी बताता है उसके पास वापस आने के लिये हमें क्या करना है। हमारे जीवनों का मूल कर्त्तव्य यही है कि हम अपने परमेश्वर का भय मानें और उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करें। उसी का अनुग्रह हम सब पर बना रहे।

क्या वचन को न जानने वालो का उद्धार होगा?

जे. सी. चोट

तुलनात्मक रूप में कहें तो कलीसिया में ऐसे बहुत कम लोग हैं जो वह काम कर रहे हैं जो यीशु की बात को मानते हुए, सारी मनुष्यजाति के पास सुसमाचार को ले जाने का काम हैं।

सर्वेक्षणों से पता चलता है कि कॉलेज की उम्र के जवानों में विशेष तौर पर यह माना जाता है कि न्याय के समय उन सब का जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना, उद्धार हो

जाएगा, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पता ही नहीं है।

इस तर्क के आधार पर निष्कर्ष यह निकलेगा कि यदि लोग अज्ञानता की स्थिति में खोए हुए नहीं हैं, तो हम उनके पास सुसमाचार को न ले जाएं, क्योंकि यदि हम उन्हें बताते हैं तो वे उद्धार के संदेश को नकार देंगे और तब न्याय के दिन उनके पास कोई बहाना नहीं होगा और इस कारण वे दोषी ठहराए जाएंगे।

स्पष्ट यह है कि वे लोग जो यह मानते हैं कि जिन लोगों ने कभी सुसमाचार को नही सुना है, सुरक्षित हैं, प्रभु के उद्धार के संदेश को उनके पास ले जाने का कोई प्रयास नहीं करते, और यह सच है कि यदि अपनी अज्ञानता के कारण वे सभी अनन्तकाल के लिए बचाए जाते हैं, तो हम उन्हें बताकर उनका बड़ा नुकसान करेंगे। अगली बात तर्कसंगत तो लग सकती है, परन्तु बाइबल के अनुसार सहीं नहीं हैं बल्कि सच्चाई तो यह है कि लोगों के खोए होने का कारण यह नहीं है कि उन्होंने सुसमाचार को सुना है या नहीं, बल्कि उनके खोए होने का कारण उनका पाप में लगे होना और पापी ठहराए जाना हैं वे पापी हैं, इसलिए यदि वे अपने पापों की क्षमा प्राप्त किए बिना मर जाते हैं तो अनन्तकाल के लिए उनका नाश होगा।

परन्तु उनका उद्धार कैसे हो सकता है। उन्हें सुसमाचार बताया जाना आवश्यक है कि यीशु मसीह उन्हें बचा सकता है, परन्तु उसकी इच्छा को सुन लेने के बाद उन्हें उद्धार पाने के लिए सुसमाचार की आज्ञा मानना आवश्यक है (16:15,16)।

प्रभु उन सब से, जो परमेश्वर को नहीं जानते और जो सुसमाचार को नहीं मानते, बदला लेने वापस आ रहा है(2 थिस्लुनीकियों 1:7-9)। ध्यान दें कि पौलुस कहता है कि प्रभु उन्हें दण्ड देने लिए वापस आएगा जो परमेश्वर को नहीं जानते और जो उसकी इच्छा को जानते तो हैं परन्तु मानते नहीं। पतरस ने पूछा, ''क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए और जब न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? और यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?'' (1 पतरस 4:17,18)। उत्तर स्पष्ट है।

अदन की वाटिका में जब पुरूष और स्त्री ने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा तो उनकी आंखें खुल गईं और वे पापी हो गए इसलिये कोई भी जन्म से चाहे आदम और हव्वा के पाप का दोषी नहीं है, परन्तु जब वह गलत और सही की पहचान की उम्र में पहुंच जाता है तो वह पापी बन जाता है। पौलुस कहता है कि सब जवाबदेह लोग पापी हैं (रोमियों 3:23), और यह कि पाप की मजदूरी मौत है (रोमियों 6:23)। बिल्कुल सही, इस कारण यदि कोई पापी परमेश्वर की इच्छा को मान लेता है (मरकुस 16:16) तो उसका उद्धार हो सकता है और यदि वह मसीह के पदचिह्नों पर चलता रहता है तो यीशु मसीह का लहू उसे उसके सब पापों से शुद्ध करता रहता है ताकि स्वर्ग में उसका उद्धार हो सके(1 यूहन्ना1:7)।

परन्तु पापी को परमेश्वर की इच्छा का पता कैसे चलेगा? उसे बताया जाना आवश्यक है। प्रभु ने प्रेरितों और मसीहियत की समय रेखा में उसके बाद के सब लोगों

को सारे संसार में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार सुनाने की आज्ञा दी (मरकुस 16:15)। मत्ती ने कहा कि हमें सब जातियों में जाकर सिखाना आवश्यक है (मत्ती 28:19, 20)। परन्तु केवल इसलिए कि उन्हें पता नहीं है कि परमेश्वर उनसे क्या कहता है यदि मनुष्य का उद्धार पहले ही हो चुका है और लोगों का उद्धार पहले ही हो चुका है तो सिखाने की क्या आवश्यकता है। परन्तु क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि प्रभु से लोगों का उद्धार उसकी इच्छा को न जानने के कारण था और फिर हमें उन तक सुसमाचार ले जाने, उसकी आज्ञा को न मानने के लिए वह हमें दण्ड देगा। परन्तु फिर यदि हम उनके पास सुसमाचार को ले जाते हैं। तो जिनसे वे आज्ञा न मानने पर नाश हो सकते हैं? यह कैसा उलझन भरा संसार होगा। जो संदेश उद्धार दिलाने वाला होगा वह वास्तव में दण्ड देने का माध्यम बन जाएगा। परन्तु सच्चाई को न जानने वाले लोग अपने पापों के कारण नाश हुए हैं और उनकी एकमात्र आशा यह है कि हम उनके लिए सुसमाचार को ले जाएं।

यदि मनुष्य का उद्धार बिना सुसमाचार को जाने हो सकता है तो प्रभु को उद्धार की कीमत अनन्त जीवन की आशा दिलाने के लिए क्रूस पर मरने की क्या आवश्यकता थी। किसी भी स्थिति में अज्ञानता मसीह के लहू से कहीं बढ़कर उद्धारकर्त्ता होनी थी।

परन्तु पाप में रहते हुए किसी का उद्धार नहीं होगा और इस कारण अज्ञानता में भी किसी का उद्धार नहीं होगा। इसके अलावा यदि हम उन लोगों के पास सुसमाचार को नहीं ले जाते जो परमेश्वर को नहीं जानते, तो न केवल अपने पाप उद्धार पाने के ढंग को न जानने के कारण उनका नाश होगा बल्कि परमेश्वर की आज्ञा को न मान पाने के कारण हमारा अपना भी नाश होगा। दूसरी ओर यदि हम उनके पास सुसमाचार को ले जाते हैं। और उनका नाश इसलिए हो जाता है कि उन्होने इसे मानना नहीं या इसे मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि हम बच जाएंगे क्योंकि उन्होंने वही किया जो यीशु ने हम से करने को कहा।

हमें यह भी याद रखना होगा कि हो सकता है कि संसार को इतना अधिक पता हो जितना हमने सोचा न हो। उदाहरण के लिए बाइबल का अनुवाद संसार की अधिकतर भाषाओं में किया जा चुका है और इसकी प्रतियां संसार भर में हर जगह मिल जाती हैं। फिर कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्चों ने संसार भर में अपने प्रचारक भेजे हैं जिससे लाखों करोड़ों लोगों को यह तो पता है कि एक परमेश्वर और एक उद्धारकर्त्ता है और यह कि बाइबल उद्धार का उनका संदेश है। बेशक वैसे ही प्रयासों से और पत्राचार के माध्यम से मसीह की कलसिया में बहुत काम किया था। कलीसिया आज बड़े-बड़े शहरों में और बड़े-बड़े शहरों के साथ-साथ संसार के छोटे-छोटे असंख्य नगरों में मिल जाती है।

इनके साथ-साथ साहित्य वितरण, रेडियो और टीवी कार्यक्रमों तथा मसीह की शिक्षा बताने के और बहुत से माध्यम जोड़ लें तो आप देखें कि बाइबल का संदेश किसी न किसी प्रकार से चाहे थोड़ा या बहुत पूरी सच्चाई के साथ संसार के कोने में पहुंचा है। जिससे लोगों को यह पता चल जाना चाहिए कि मनुष्य खोया हुआ है और उसे उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। तो फिर परमेश्वर को सुनने वाले को सच्चाई के बढ़ने वाले ज्ञान से

जो उसे आरम्भ में दिया गया था इतना जिम्मेदार मानता है, इसका पता तो केवल न्याय के समय चलेगा।

परन्तु एक बात तो पक्की है कि परमेश्वर के वचन को ले जाने और उद्धार के सुसमाचार को हर किसी को सुनाकर काम पूरा करने की जिम्मेदारी हम पर है। पाप से आत्मा का उद्धार अज्ञानता नहीं बल्कि केवल मसीह का लहू कर सकता हैं।

क्या स्त्री मण्डली में प्रचार कर सकती है?

बैटी बर्टन चोट

आज बहुत सारी डिनोमिनेशनों में, आराधना सभाओं में स्त्रियां सरगरमी से भाग लेती हैं। और इस सबके पीछे सोच यह है कि बाइबल हजारों साल पहले लिखी गई थी और उस समय के हिसाब से आज का समाज बहुत उन्नति कर चुका है। उस समय स्त्रियों को ''निचले दर्जे की'' और ''पुरूष के अधीन'' माना जाता था, परन्तु अब वे उन सारे कामों को, जिन्हें पुरूष कर सकता है, करने के लिए स्वतन्त्र हैं। अधिकतर लोग वास्तव में इस नई सोच से बहुत खुश हैं, उनका मत है कि सदियों से स्त्रियों के साथ जो अन्याय हो रहा था, वह अब बंद हो गया है। इसलिए स्त्रियां प्रचार करती हैं, वे बिशप बनती हैं पास्टर कहलाती है, वे पुरूषों वाले धार्मिक लिबास तक पहनतीं और पुरूषों वाले काम करती हैं।

<u>विचार करने वाली बात:</u> आत्मिक नेतृत्व की भूमिका में स्त्रियों का होना आपको कैसा लगता है? क्या कालांतर में स्त्रियों को रोकने का कारण वास्तव में दबाव था या परमेश्वर के वचन के रूप में बाइबल को मानते हुए इसका सम्मान? क्या आधुनिक विचार (कि परमेश्वर ने नहीं बल्कि मनुष्यों ने अपने विचारों को लिखा है, और उन्होने अपने अनुभव लिखे है) क्या इन विचारों ने पवित्र शास्त्र के अधिकार को घटा दिया है?

क्या परमेश्वर ने इस नई स्वतन्त्रता की स्वीकृति दी है? क्या बाइबल केवल उस समय के लोगों के लिए लिखी गई थी, यानी क्या इसके लेख पहली सदी या इसके पहले के लेखकों के अपने विचार थे? यदि सचमुच इसके वचन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मन से न होकर मनुष्य की सोच हैं तो अब तक यदि हम इसकी बातें मानते आ रहे हैं, तो हम अज्ञानता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। परन्तु यदि इसके लेख परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं, यानी परमेश्वर ने इसमें अपने श्वास के द्वारा अपने हृदय से मनुष्य के लिए संदेश दिया है, तो किसी मनुष्य को यह अधिकार नहीं है कि वह इसे ''पुराना'' कहे या इसे यह कहकर अनदेखा कर दे कि यह आज के समय में प्रासंगिक नहीं है।

प्रभु यीशु ने साफ-साफ कहा, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। उसने प्रेरित पतरस को बताया, ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा;

और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा'' (मत्ती 16:19)।

पवित्र शास्त्र में बार-बार इसे परमेश्वर का वचन होने का दावा किया गया है, न कि मनुष्य का वचन कहा गया है, ''सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है'' (2 तीमुथियुस 3:16)। पवित्र शास्त्र के अन्तिम संदेश में हमारे प्रभु ने चेतावनी दी थी, ''यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा'' (प्रकाशितवाक्य 22:18,19)।

परमेश्वर के वचन के साथ खेलना आग से खेलना है। यह समझकर कि परमेश्वर से बढ़कर हमारे पास अधिकार है, उसके वचन को बदलना अपने ऊपर दण्ड लाना है।

<u>विचार करने वाली बात:</u> कल्पना करें कि न्याय के दिन परमेश्वर की उपस्थिति में आप उसके सामने खड़े हैं। जीवन भर आप बहस करते रहे कि पवित्र शास्त्र का फलां नियम और आज्ञाएं वास्तव में महत्वपूर्ण नहीं थीं और केवल एक ही बात का महत्व था कि परमेश्वर तो अनुग्रह करने वाला परमेश्वर हैं एक ओर आप यह कह रहे होंगे, ''कोई फर्क नहीं पड़ता।'' दूसरी ओर पवित्र आत्मा कह रहा होगा, ''तू ने परमेश्वर के वचन में जोड़ा है'', और इसमें से निकाला है। ''एक नाचीज का पवित्र आत्मा के साथ बहस् करना, वह भी ढीठ होकर। आपको कैसा लगेगा?''

गलातियों 1:6-9 में पौलुस ने चेतावनी दी थी कि चाहे स्वर्ग से कोई स्वर्गदूत भी आकर उस शिक्षा के विपरीत, जो पहले ही परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा दे दी है, अलग शिक्षा दे, तो वह परमेश्वर की ओर से श्रापित होगा। पुरूष हों या स्त्री, वे सब लोग जिन्हें लगता है कि उन्हें परमेश्वर के वचन में बदलाव करने का अधिकार है, न्याय के दिन दोषी ठहरेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:18,19)।

बाइबल अध्ययन में ''अधिकार प्राप्त'' ''जीजस सेमिनार'' नामक एक समूह की सभा हुई, जो धार्मिक जगत में अगुवे होने का दावा करते थे। रस्सल शॉर्टो ने गॉस्पल टुथ नामक घटना का विवरण लिखा। उसने कहा, ''जीजस सेमिनार सुसमाचार की पुस्तकों की शब्द-दर-शब्द गहन समीक्षा करता है, जो अपने आप में एक सही प्रोजेक्ट है। इस समूह का दुस्साहस इस बात में मिलता है कि वे इस पर ज़ोर डालते हैं कि किन शब्दों और घटनाओं को ऐतिहासिक यीशु के साथ जोड़ा जाए। शेष वचनों को 'कहानीकारों' द्वारा जोड़ा गया माना जाता है। जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, प्रामाणिकता के पक्ष में मत थोड़े हैं।''

<u>विचार करने वाली बात:</u> डिनोमिनेशनों के प्रचारक तथा अगुवे सरेआम यह सिखाते हैं कि बाइबल परमेश्वर का अविनाशी वचन नहीं बल्कि मनुष्य के मन की उपज है, तो एक साधारण ''विश्वासी'' का कहना ही क्या? यीशु कुंवारी से नहीं जन्मा था, उसने आश्चर्यकर्म नहीं किए, कि वह क्या मुर्दों में से जी नहीं उठा था? क्या यह व्याख्या सही हो सकती है? हमारे लोग अविश्वासी क्यों बनते जा रहे हैं।

डिनोमिनेशनों के अगुओं तथा प्रचारकों में यही व्यवहार पाया जाता है, जिस कारण लोग बाइबल की उपेक्षा करके आत्मिक मामलों में अगुआई के लिए आधुनिक संस्कृति की ओर देखते हैं।

परन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुआई का काम मनुष्य की सनक पर नहीं छोड़ा है। इसके बजाय उसने स्पष्ट नियम दे दिए हैं, उन्हें अपने वचन में साफ-साफ लिख दिया है और आज हमारे उपयोग के लिए उस वचन को सम्भाल दिया है। हर आत्मिक बात में हमारा अधिकार बाइबल ही होनी चाहिए।

पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां किसी स्त्री ने खड़े होकर, परमेश्वर के अधिकार से प्रचार किया हो। प्रभु यीशु के साथ बहुत सी स्त्रियां होती थीं और वे उसकी और प्रेरितों की सेवा किया करती थीं, परन्तु उनमें से किसी को भी कभी प्रचार के लिए नियुक्त नहीं किया गया। सत्तर जनों को चुन कर भेजे जाने में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उनमें कोई स्त्री भी हो। सभी प्रेरित पुरूष (नर) ही थे, और पिन्तेकुस्त वाले दिन पहली बार सुसमाचार सुनाने के लिए पतरस जब ग्यारह प्रेरितों के साथ खड़ा हुआ, तो वहां भी किसी स्त्री ने प्रचार नहीं किया था।

निश्चय ही प्रभु यीशु की माता मरियम जबर्दस्त ''गवाही'' दे सकती थी। मरियम मगदलीनी को प्रभु द्वारा आश्चर्यकर्म से चंगाई दी गई थी और मुर्दों में से जी उठने के बाद सबसे पहले उसने मरियम को ही दर्शन दिया था (शायद उसका विश्वास किसी भी प्रेरित से उस समय बढ़कर था। मरकुस 14:16 में उसने उनके अविश्वास के कारण उन्हें डांट लगाई थी)। परन्तु इनमें से किसी भी स्त्री को प्रचार करने की अनुमति नहीं दी गई थी। मरियम और मारथा प्रभु यीशु की बहुत करीबी मित्र थीं, उनके भाई लाजर को प्रभु यीशु ने मुर्दों में से जिलाया था। वे लोगों को प्रभु यीशु के बारें में बहुत अच्छी तरह गवाही देकर बता सकती थीं। परन्तु न तो परमेश्वर ने और न ही प्रेरितों ने उन्हें गवाही देने को कहा।

क्यों? क्योंकि समाज में, घर में, और प्रभु की कलीसिया में स्त्री की भूमिका वही नहीं है जो पुरूष की है। पुरूषों को सुसमाचार की सार्वजनिक रूप में रक्षा करने, इसे निर्भय होकर सुनाने की जिम्मेदारी दी गई है ताकि जो लोग सुनें उनका मनपरिवर्तन हो और वे दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।

दूसरी ओर, स्त्रियों को खामोशी से सीखने को कहा गया है। लिखा है, ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है'' (1 कुरिन्थियों 14:34, 35)। कई स्त्रियां जो लोगों के समूह में प्रचार करती हैं, उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगेगी।

1 तीमुथियुस 2:8-14 में आगे कहा गया है: ''सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरूष (यूनानी शब्द aner का अनुवाद, जिसका अर्थ नर होता है) बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आपको संवारें, न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से। क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करने वाली स्त्रियों को यही उचित भी है। और स्त्री को चुपचाप [खामोशी से] पूरी अधीनता से

सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरूष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई।''

ध्यान दें कि पवित्र आत्मा हमारा ध्यान फिर से पुरूष के साथ स्त्री के सम्बन्ध से जुड़ी दो प्रासंगिक बातों की ओर ले जाता है:

(1) आदम पहले बनाया गया था, उसके बाद हव्वा;

(2) आदम बहकाया नहीं गया था बल्कि स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी ठहरी।

इन अन्तिम दिनों में स्त्रियां फिर शैतान की बातों की ओर ध्यान लगा रही हैं और कमजोर पुरूष फिर से आदम की कमजोरी को दोहरा रहे हैं क्योंकि बहुत सी जगहों पर स्त्रियां पुलपिट पर से प्रचार कर रही हैं। उन स्त्रियों पर गौर करें जिन्हें लगता है कि उन्हें प्रचारक होना चाहिए। उनमें से अधिकतर के संदेश, वस्त्र, और दावे चरमपंथी होते हैं। ऐसी स्त्रियां हमारे सामने इस बात का स्पष्ट उदाहरण हैं कि कुछ स्त्रियां हव्वा की नकल कर रही हैं और उनके सम्बन्ध में जो परमेश्वर का वचन कहता है, उससे उन्होंने अपने कान फेर लिए हैं। नहीं, परमेश्वर ने स्त्रियों को प्रचार करने के लिए अधिकृत नहीं किया है।

बाइबल की वाचाएं

जैरी बेट्स

यह अध्ययन बड़ा ही आवश्यक है परन्तु बहुत बार इस विषय को नज़र अन्दाज किया जाता है। मसीही समूहों के बीच पाए जाने वाले अलग-अलग मतों के मुख्य कारणों में से एक वाचाओं की नासमझी का होना है। अधिकतर लोग केवल यह मान लेते हैं कि पूरी बाइबल ही परमेश्वर का वचन है इस कारण हमें इसे पूरे का पूरा मानना आवश्यक है। वास्तविकता यह है कि कोई भी इसे पूरा मानने की कोशिश भी नहीं करता। पूराना नियम कई प्रकार के जानवरों की बलियों की आज्ञा देता है पर मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो परमेश्वर की आराधना में पशुओं के बलिदान आज भी देता हो। इसलिए बाइबल की वाचाओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन बड़ा ही आवश्यक है।

वाचा क्या होती है?: हमारे इस अध्ययन में पहला कदम यह तय करना है कि असल में वाचा है क्या। इसे सरल शब्दों में कहें तो वाचा एक समझौता है। यह दो पक्षों के बीच हुआ एक समझौता है, जिसमें दोनों पक्षों का उस समझौते को पूरा करने के लिए अलग-अलग जिम्मेदारियां तय होती है। प्राचीन जगत में वाचाएं दो तरह की होती थीं। एक तरह से यह दो बराबर के पक्षों के बीच समझौता था, जैसे दो व्यक्तियों के बीच हुआ समझौता। आज की तरह दो देशों के बीच होने वाले समझौतों की तरह ही वे ऐसी बातचीत करते और उससे एक सहमति बनाते, जिस पर दोनों पक्ष राजी हो सकते थे। दूसरी किस्म का समझौता किसी छोटे व्यक्ति के साथ बड़े व्यक्ति का होता था जैसे दूसरे देश पर विजय पाने का। बड़े पक्ष की कुछ मांगें और प्रतिज्ञाएं होती थीं। छोटा पक्ष उन को मानने या फिर परिणाम भुगतने के लिए बाध्य होता था। साफ है कि ऐसा समझौता मनुष्य के साथ बांधी

जाने वाली वाचाओं के साथ है। मनुष्य को परमेश्वर के साथ सौदेबाजी करके मांगे रखने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह हमारा सृष्टिकर्ता है।

ऐसी वाचाएं आम तौर पर दोनों पक्षों द्वारा शपथ और गवाहों की उपस्थिति में बांधी जाती थीं। उन्हें किसी प्रकार दृढ़ भी किया जाता है, जैसे कोई यादगार बनाकर या एक-दूसरे को उपहार देकर। यह इन वाचाओं की गम्भीरता को दिखाता है। वाचा बांध लिए जाने के बाद उन्हें बिना गम्भीर परिणामों के तोडा नहीं जा सकता। गलतियों 3:15 में पौलुस ने वाचाओं के इस पहलू की बात की: ''हे भाइयो, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं, कि मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उस में कुछ बढ़ाता है'' पौलुस के कहने का मतलब था कि यदि आदमी की बांधी वाचाएं इतनी मजबूत थीं तो फिर परमेश्वर के साथ बांधी गई वाचा इससे कितनी बढ़कर होतीं। यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि ये वाचाएं केवल उन्हीं लोगों पर लागू होती थीं, जिनके साथ बांधी जाती थीं यदि मैंने A नामक किसी व्यक्ति के साथ समझौता किया हो वह समझौता उसके साथ ही होगा। मैं B या किसी दूसरे व्यक्ति के साथ समझौते को मानने को बाध्य नहीं। अगले पाठों में इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

परमेश्वर द्वारा बांधी गई अलग-अलग वाचाएं: जैसा हमने कहा है कि परमेश्वर ने अलग-अलग समयों पर अलग-अलग लोगों के साथ अलग-अलग वाचाएं बांधी हैं। **पहली वाचा** आदम के साथ बांधी थी। परमेश्वर ने एक वाटिका बनाई और उस बाग में आदम और हव्वा को रखा। परमेश्वर ने उन्हें सब कुछ दिया। यह पृथ्वी पर स्वर्गलोक ही था। परमेश्वर ने वचन दिया कि वे सदा तक जीवित रहेंगे, पर साथ में केवल एक शर्त दे दी थी कि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खा सकते। आदम और हव्वा ने उस मना किए हुए फल को खा लिया। वाचा को तोड़ डाला और उन्हें उस पाप के परिणामस्वरूप बाग को छोड़ना पड़ा।

दूसरी वाचा। हम पढ़ते हैं कि दूसरी वाचा नूह के साथ बांधी गई। परमेश्वर ने वायदा किया कि वह प्रलय के साथ संसार को दोबारा कभी नष्ट नहीं करेगा। मेघधनुष और परमेश्वर के बीच बांधी गई उसी वाचा का चिन्ह है (उत्पत्ति 9:9-17)। इस वाचा में नूह को फलने-फूलने और पृथ्वी पर फैल जाने की आज्ञा भी शामिल है (उत्पत्ति 8:17)।

एक और वाचा दाऊद के साथ बांधी गई थीं 2 शमूएल 7 में हम दाऊद को दिए परमेश्वर के इस वायदे को देखते हैं ''जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, ओर तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। वरन तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी'' (2 शमूएल 7:12, 16)। 2 शमूएल 23:5 में दाऊद इस वायदे को वाचा कहता है। भजन 132:12 में फिर इसे वाचा कहा गया है: ''यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा, उस पर चलें, तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग-युग बैठते चले जाएंगे।'' हम देख सकते हैं कि परमेश्वर ने वायदा किया कि दाऊद का एक वंश सदा के लिए उसकी गद्दी पर बैठेगा।

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ भी एक वाचा बांधी। इस वाचा के बारे में हम मुख्यतया उत्पत्ति 13:1-3 में पढ़ते हैं: ''यहोवा ने अब्राहम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं

तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।'' इस वाचा में अब्राहम की ओर से परमेश्वर द्वारा चार मुख्य वायदे मिलते हैं। अब्राहम ने एक बड़ी जाति का पिता बनना था; इस जाति को रहने के लिए एक देश मिलना था। परमेश्वर ने उसे आशीष देने का वायदा किया; और अब्राहम के द्वारा पृथ्वी की सब जातियों ने आशीष पानी थी। यह अंतिम वायदा आत्मिक किस्म का था, जबकि तीन अन्य वायदे शारीरिक थे। यह आत्मिक वायदा यीशु के आने का छुपा हवाला था। जिसने केवल अब्राहम के घराने के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए आत्मिक उद्धार लाना था।

बाद में अब्राहम की संतान के मिस्त्र की दासता से निकल जाने के बाद परमेश्वर उन्हें सीनै पहाड़ पर ले गया और वहां परमेश्वर ने मूसा और इस्त्राएलियों के साथ एक वाचा बांधी? ''तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्त्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और वाचा का पालन करोगें, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्त्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही है'' (निर्गमन 19:3-6)। इस वाचा में दस आज्ञाएं शामिल थीं: ''मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक न तो उस ने रोटी खाई और न पानी पीया। और उस ने उन तख्तियों पर वाचा के वचन अर्थात दस आज्ञाएं लिख दीं'' (निर्गमन 34:28)। अंतिम वाचा सारी मनुष्य जाति के साथ बांधी गई है, जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु के साथ पक्की हुई। हमारे इस अध्ययन में खासकर दो अंतिम वाचाओं की बात है। हमारा यह अध्ययन खासकर इन दो वाचाओं पर हैं। इन दो वाचाओं की उलझन के कारण ही आज धार्मिक जगत में पाई जाने वाली फूट को देखते हैं। इसलिए अगले पाठों में हम इन दो वाचाओं के विभिन्न पहलुओं पर और विस्तार से बात करेंगें।

लेपालक होना

अर्नेस्ट गिल

बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो बल्कि अनन्त जीवन पाए।

यूहन्ना ने परमेश्वर की प्रेरणा से, सुसमाचार के अपने विवरण के अध्याय 1 में बताया है कि ''जितनों ने उसे [यानी यीशु को] ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया।'' उन लोगों की बात करते हुए, आगे वह बताता है कि वे ''न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।''

गलतियों के नाम लिखते हुए प्रेरित पौलुस कहता कि परमेश्वर ने उन्हें ''जगत की उत्पत्ति से पहिले उस [यानी यीशु] में चुन लिया... कि यीशु मसीह के द्वारा ... उसके लेपालक पुत्र हों।''

लेपालक होने का अर्थ, साधारण शब्दों में कहें तो, यही होता है कि ले के पाले हुए। बाइबल यीशु को परमेश्वर का एकलौता पुत्र बताती है। मतलब यह कि परमेश्वर का असल में केवल एक ही पुत्र है। दूसरे लोगों को वह गोद लेकर वही मीरास देने का वादा करता है, जो पुत्र के रूप में यीशु मसीह की है।

हमारे देश में गोद लेने का एक कानून है। कई बार लोग उन बच्चों को जिनके माता-पिता नहीं होते या किसी कारण वे उन्हें छोड़ देते हैं, या किसी और कारण से गोद ले लेते हैं। अगर कोई किसी बच्चे को गोद ले लेता है तो गोद लिए बच्चे को घर में जन्मे बच्चों वाली सभी आशिषें प्राप्त हो जाती हैं या यूं कहें कि वे उसकी हो जाती हैं।

मैं आपको एक कैनेडियन परिवार की बात बताता हूं जिसने एक भारतीय बच्ची को गोद ले लिया। वह लड़की बड़ी हो गई। अब वह रहती तो भारत में ही है, परन्तु उसका मायका अब वो कैनेडियन परिवार है जिसने उसे गोद लिया था। और वहां उसका आना-जाना रहता है। मैंने सुना है कि अब वह लड़की उस परिवार की जायदाद की उतनी ही हकदार है जितने उस परिवार के दूसरे बच्चे। अब वह उस परिवार का हिस्सा है। उस परिवार की वारिस होने के साथ-साथ, उस के लिए अब उस परिवार के जो-जो फर्ज या जिम्मेदारियां हैं, उन्हें भी निभाना आवश्यक हैं।

एक और उदाहरण मेरे ध्यान में आता है। किसी दम्पत्ति के यहां कोई संतान नहीं थी। उन्होंने अपने किसी जानकार के बच्चे को गोद लेकर उसे पढ़ाया-लिखाया और उसे अच्छा आदमी बनाया। वह अच्छी नौकरी करने लगा। उसके बड़ा होने पर स्वाभाविक ही है कि वे बूढ़े हो गए थे। पर न तो उनकी पहले जैसी सेहत और न पहले जैसा काम रहा था। इतने में उस बच्चे को कहीं से पता चल गया कि उसके असली मां बाप वे नहीं बल्कि कोई और हैं। उसे बहुत बुरा लगा। उसके मन में उनके लिए मोह जाग गया और उसने पालने वाले के प्रेम और लगाव की परवाह न करते को छोड़कर वह अपने जन्म देने वालों के पास चला गया।

जिन्होंने उसे लेकर पाला था वे बहुत दु:खी तो थे, परन्तु उसकी बात को मानने के सिवाय उनके पास और कोई चारा न था। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने हमें ले के पाला है। यानी हम उसे लेखपालक कहते हैं। लेखपालक होने के नाते हमें परमेश्वर को और भी धन्यवाद देना चाहिए कि हम जो नालायक थे, हमें परमेश्वर ने बिना कोई कीमत लिए, अपनी संतान बना लिया।

बहुत से लोग जो मसीही कहलाते हैं, यह जानते और मानते हैं कि वे ले के पाले हुए हैं। यानी परमेश्वर ने हमें संसार में से लेकर अपने पुत्र और पुत्रियां बनाया है। परन्तु बड़े होने के बाद अगर हम फिर से संसार के पास लौट जाते हैं। परमेश्वर को सचमुच में दु:ख तो होता ही है, उसे यह हक्क भी है कि वह हमें फिर से बेदखल करे दे और हम अनाथ हो जाएं।

माता-पिता की आशिषों को पाने के लिए हमें उन की बात को मानना आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि जब वे बूढ़े हो जाएं तो उनका ध्यान रखें। उनकी आवश्यकताओं

को वैसे ही पूरा करें जैसे उन्होने हमें तब सम्भाला था जब हमारा कोई नहीं था। उन्होंने हमें माता-पिता का प्यार दिया था।

परमेश्वर का परिवार

''जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तब उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे और उससे बातें करना चाहते थे। किसी ने उससे कहा, 'देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं। यह सुनकर उसने कहनेवाले को उत्तर दिया, 'कौन है मेरी माता? और कौन है मेरे भाई?' और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा, 'देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और मेरी बहिन और मेरी माता है' (मत्ती 12:46-50)।

पवित्र शास्त्र का यह भाग आत्मिक सम्बन्धों पर एक बेहतरीन सबक देता है। यीशु अभी-अभी अपनी शिक्षा और सामर्थ के अपने कामों पर गलील के आस-पास के सारे देश को उत्तेजना और अचम्भे से भरकर आया था। उसकी प्रसिद्धि देश भर में फैल गई थी। जहां भी वह जाता, लोगों की भीड़ उसके पीछे हो लेती थी। एक मसीही होते हुए आप परमेश्वर के परिवार को कितना महत्व देते हैं?

जहां हर कोई महत्वपूर्ण है

रॉय डी. बेकर

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ के समय किसी को भी उसकी समझ नहीं होगी कि वह कौन है। यूहन्ना ने लिखा है कि उसके अपने भाई ही उस पर विश्वास नहीं करते थे (यूहन्ना 7:5)। मरकुस हमें बताता है कि जब वह नासरत में वापस आया तो उसके अपने लोग उसे यह पकड़ने के लिए गए कि ''उसका चित ठिकाने नहीं है।'' कहने का मतलब है कि ''वह पागल है!'' वचन हमें बताता है कि उसकी बात करने की इच्छा से उसकी मां और भाई बाहर खड़े हुए, पर बड़ी भीड़ के कारण वे उस तक नहीं पहुंच पाए। बाइबल यह नहीं बताती है कि वे उससे बात क्यों करना चाहते थे। उस तक पहुच न पाने के कारण उन्होंने किसी के हाथ संदेशा भेजा और उसने उसके कान में कहा, ''हे यीशु देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझसे बातें करना चाहते हैं''

इस संदेश का उसका उत्तर उन्हें यह बताना था कि सच्चे अर्थ में इनसानी तौर पर कहें तो, वह उनका रिश्तेदार नहीं था जो रिश्तेदारी में उसके नजदीकी थे, बल्कि उनका भी था जो यीशु द्वारा उन्हें दिए गए परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते और उसे मानते थे। उसने अपने चेलों की ओर देखा और उन्हें एक सवाल से चौंका दिया: ''कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?'' यीशु ने अपनी भाषा को शारीरिक से आत्मिक बना दिया। ''देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर

चले, वही मेरा भाई और मेरी बहिन और मेरी माता है।'' अन्य शब्दों में वह कह रहा था कि कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर की इच्छा को मानता है, वह उसके परिवार का हिस्सा है।

यीशु किसी भी अर्थ में अपने शारीरिक परिवार के लिए अपनी उकृतज्ञता को नहीं दिखा रहा था। इसके उलट वह उनके लिए कृतज्ञता (आभार) को दिखा रहा था और फिर भी उसे उतना ही प्रिय जितनी उसकी मां थी, वह आत्मिक सम्बन्ध है जो उतना ही मजबूत और प्यारा है। कोई यह न समझ ले कि वह अपनी मां को जिसने उसे जन्म दिया और उसे दूध पिलाया और बड़े चाव से उसे मिलने के लिए आई थी, अपमानित किया। यदि किसी को ऐसा लगता है तो उसे चाहिए कि वह क्रूस तक उसके साथ चले; वहां पर उसे अपने दुख, पीड़ा और सताव के उस दर्द को भूल जाते हुए देखे ताकि अपनी चिंता में वह संसार में अपने बाकी दिनों के लिए अपनी मां के लिए तसल्ली देने का इंतजाम कर सके।

वह अपनी मां और घर के साथ इन सालों के दौरान वफादार और समर्पित तो रहा ही, पर स्वर्ग में अपने पिता के प्रति अपने आचरण और अपने मसीहा होने के शारीरिक रिश्तेदारों को आत्मिक से कम महत्व देने के लिए विवश किया। इससे यीशु को आत्मिक सम्बन्धों में सबक देने का अवसर मिल गया। उसने इस अवसर का इस्तेमाल अपनी बात कहने के लिए किया कि यदि हम अपने आपको परमेश्वर के सहारे छोड़ देते हैं तो हम उसके परिवार का हिस्सा बन जाते हैं

यह जानना कि जो लोग परमेश्वर के वचन को सुनते और इसे मानते हैं वे यीशु के सबसे करीबी रिश्तेदार हैं कितना आदर देने वाला और आशीष भरा है! यह आत्मिक सम्बन्ध स्वभाविक और शारीरिक सम्बन्ध से अधिक नाजुक है और किसी भी खून के रिश्ते से बढ़कर महत्वपूर्ण है। इनसानियत शारीरिक है और थोड़ी देर की है। मसीह के साथ सम्बन्ध आत्मिक हैं और सदा तक रहने वाले हैं। यीशु परमेश्वर के परिवार में उन सब को मिला लेता है जो उसमें विश्वास करते हैं; वह प्रेम और सहानुभूति की मजबूत डोरियों से उन सब को इकट्ठे कर बांध देता है। ''क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और मेरी बहिन और मेरी माता हैं''

परमेश्वर की इच्छा को मानना हमारे शिष्य होने की आत्मिक परीक्षा है। यीशु उन सब को जो परमेश्वर की इच्छा को मानते हैं, भाई, बहन और माता कहकर बुलाता है क्यों? क्योंकि जो लोग उसकी बात को मानते हैं वे वही करते हैं जो पिता चाहता है। कोई विश्वास करता है जो कि आज्ञा मानने का पहला कदम और आरम्भ है। वह पिछले पापों से मन फिराकर और यीशु का मसीह होने का इनकार करके और अपने आपको मसीह में रखते हुए पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेता है।, जो लोग इन आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें कलीसिया में जो कि परमेश्वर का परिवार है मिला लिया जाता है, वे उसकी देह के अंग और एक दूसरे के अंग हैं।

हम परमेश्वर के बड़े परिवार का हिस्सा हैं, और जहां तक परमेश्वर की बात है उसकी नजर में एक अंग किसी भी प्रकार से दूसरे अंग से बढ़कर नहीं है। यीशु ने कहा,

''मेरी माता, मेरे भाई? तुम सब मेरे परिवार का हिस्सा हो यदि तुम परमेश्वर की इच्छा को सुनते और मानते हो'' हम इस आत्मिक सहिभागिता का हिस्सा हैं जिसे हम पवित्र लोगों का समाज, विश्वासियों का समाज अर्थात परमेश्वर का परिवार कहते हैं।

उद्देश्य और प्रमुख विषय (कुलुस्सियों)

ऑवन डी. आल्ब्रट

उद्देश्यः पत्र का उद्देश्य किसी के कुलुस्से के विधर्म पर विचार पर निर्भर है। यदि कुलुस्से की कलीसिया में विधर्म बन चुका था तो पत्र लिखने का पौलुस का उद्देश्य उन्हें मसीह में विश्वासी बने रहने की चेतावनी देना था। यदि विधर्म अभी नहीं बढ़ा था तो उसने उन्हें मसीह से न भटकने की चेतावनी देने के लिए लिखा कि वह सबसे ऊपर है और मसीही लोगों को केवल इसी को आवश्यकता है।

पौलुस किसी भी झूठी शिक्षा को जो उन्हें यीशु से दूर ले जाए रोकने का इच्छुक था। ये कलीसिया अभी नई-नई बनी थी। सदस्यों को उन खतरों के प्रति चौकस करना आवश्यक था जिनका सामना उन्हें करना पड़ सकता था। उन्होंने यीशु को आनन्द के साथ प्रभु माना था और लगता था कि वे विश्वासयोग्य मसीही जीवन के मार्ग पर है, परन्तु आगे खतरे थे। कुछ लोग उन्हें यीशु की शिक्षाओं से बढ़कर स्वीकार करने के लिए मनाने की कोशिश कर सकते थे। सदस्य यह कहना आरंभ कर सकते थे कि यीशु परमेश्वर से कम है और खतरे जो आ सकते थे, वे भौतिकवाद या दुराचार या आत्मिकता की कमी थी।

कोई भी शिक्षा जो उसकी ओर से नहीं है, वह विनाशकारी है। मसीह पूर्णतया परमेश्वर है और मसीही व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस कारण पौलुस ने उन्हें यहूदी और काफिर संस्कृतियों के आकर्षण या यूनानी फिलॉसाफियों से जिनसे उन्हें बचाया गया था प्रभावित न होने की चेतावनी दी। उसने उन्हें संसार की अनैतिक रीतियों से मरे हुए रहने और स्वर्गीय बातों के लिए जीवित होने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके सामने ठहराया उसका लक्ष्य ऊपर की बातों पर ध्यान लगाना और अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को वफादारी से पूरा करना था।

पत्र उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिए प्रोत्साहित करने वाले कवच के रूप में और किसी भी रीति से बचाने के लिए भेजा गया। पौलुस ने उन्हें मसीह के प्रति वफादार रहने और अपनी संस्कृति की अधार्मिक फिलॉसफियों और परम्पराओं और रीतियों से बचने की चुनौती दी।

मुख्य विषय

कुलुस्सियों की पुस्तक चाहे एक छोटी पुस्तक है पर इसमें बाइबल के कई महत्वपूर्ण विषय पाए जाते हैं। इसमें बहुत कम बातें हैं जो नये नियम में और जगहों में नहीं मिलती है। यह डॉक्ट्रिन, नैतिक ओर सामाजिक समस्याओं में से कई जो कुलुस्से की मण्डली

में थी और मसीही लोगों की आगामी पीढ़ियों को प्रभावित किया था, ये इसकी चर्चाओं को संक्षिप्त करती है। इसको ध्यान में रखते हुए पुस्तक के पांच प्रमुख विषय हैं–

(1) पौलुस और भाई। पौलुस ने कुलस्सियों की पत्री में अपने कई सहयात्रियों का नाम लिया, तीमुथियुस, इपफ्रास, अरिस्तर्खुस, मरकुस, बरनबास, यूस्तुस, लूका और देमास (1:1; 4:10-14)। उसने उनकी जो उसके साथ थे, चिंता और लगाव के साथ-साथ यीशु के पीछे चलने वालों के लिए अपने प्रेम को दिखाया।

पौलुस की दिलचस्पी न केवल उन लोगों में थी, जिन्हें वह जानता था बल्कि वह उन साथी मसीही लोगों के प्रति भी उन्हें उसने कभी देखा नहीं था अपना दायित्व समझता था। वह कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना करता रहा और उनमें आत्मिक विकास को बढ़ते और मसीह के प्रति सच्चे समर्पण को देखना चाहता था (1:1-14)। उसने उस उम्मीद से दुख उठाए कि सब विश्वासियों को परिपक्व और मजबूत करे और यीशु में मिलने वाली परमेश्वर की आशिषों के रहस्य को खोए हुए लोगों के साथ बांटे (1:24-29)।

(2) ऊंचा किया गया मसीह। पौलुस के अनुसार सारी सच्ची शिक्षा का आधार यीशु की महानता और अधिकार है। उसमें परमेश्वर का स्वरूप है, वह सृष्टिकर्ता है, सब पर राज करता है और कलीसिया का सिर है (1:15-18)। क्रूस पर बहे अपने लहू के द्वारा उसने परमेश्वर के साथ मेल संभव बना दिया है (1:20-23)। सारी वास्तविक समझ और ज्ञान (2:3) और परमेश्वर की परिपूर्णता मसीह में है (29:9, 10)। मसीह से संबंधित इन सच्चाइयों को पौलुस ने कुलुस्सियों को मानवीय समझ और शिक्षाओं में न लौट जाने की चेतावनी देने के लिए बताई है। उन्हें यीशु के वफादार रहना, उसमें बने रहना और मनुष्यों की फिलॉसफियां और नियमों या रहस्यमय धार्मिक रीतियों का पालन करके अपने प्रतिफल को खोना नहीं था (2:4-8, 18-23)। न ही जीने के लिए व्यवस्था उनका मार्गदर्शक होनी थी, क्योंकि इसे यीशु ने क्रूस पर कीलों से जड़ दिया था (2:14-17)।

(3) मसीह में नया। मसीह के सर्वशक्तिमान होने के कारण कुलुस्सियों को बपतिस्मे में उसके साथ दफनाए जाकर और जी उठकर ताकि उनके पाप क्षमा किए जा सके उन्हें नया बनाया गया था (2:11-13)। यीशु के साथ उनकी भागीदारी जीवन बदलने वाला प्रभाव होना था। ये मसीह के साथ मर गए थे (2:20) और उसके साथ जिलाए गए थे (3:1-3)। इस कारण जीवन में उनकी दिशा और उद्देश्य बदल जाने थे। जीने का उनका ढंग अलग होना था। उन्हें अनैतिक रीतियों को बंद करके अधार्मिक कामों पर जय पानी थी (3:5-9)। उन्हें वे गुण अपनाने थे जो यीशु में पाए जाते थे (3:10-14)। इसका परिणाम एक देह में एक होना था (3:15)।

मसीह में बड़ी-बड़ी आशिषें पाने के बाद कुलुस्से के लोग अपने दिलों के साथ गीत गाते हुए परमेश्वर की महिमा कर सकते थे (3:16)। उन्हें केवल शब्दों से ही नहीं बल्कि अपने कामों से भी मसीह को प्रसन्न करना आवश्यक था (3:17)।

(4) घरेलू विचार। दूसरों के साथ उनके संबंध यीशु के नियमों के द्वारा चलाए जाने थे। घरों में पतियों को अगुवे होना था, पत्नियों को अपने पतियों के साथ सहयोग

करना था, बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानना था, सेवकों को अपने स्वामियों की आज्ञा मानना था और स्वामियों को अपने दासों के साथ ईमानदारी के साथ और निष्कपटता के साथ व्यवहार करना था (3:18-4:1)।

(5) मसीह में क्षमा। 1:14 में पौलुस ने पापों की क्षमा का परिचय दिया और 2:11-13 में उस क्षमा में आने पर चर्चा की। उसने मरकुस और लूका नामक दो परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों का नाम लिया (4:10,14), जिन्होंने सुसमाचार के विवरण लिखे थे। उनके लेखों में इस महान विषय के संबंध में यीशु और आरंभिक कलीसिया की शिक्षाएं हैं।

कुलुस्सियों के ध्यान से अध्ययन के द्वारा मसीही लोगों की यीशु की गहराई से समझ हो जानी चाहिए, जिससे वे उसके पीछे चलने को प्रेरित हों। जो कुछ वह है और जो कुछ उसने हमारे लिए किया ताकि हम प्रसन्न हो सके और यहां पर हमें उपयोगी जीवन मिल सके और स्वर्ग में हम उसके साथ रह सके। हमें उसका आदर करना चाहिए।

मुझे छूट है!

जिमी जिविडन

डिनोमिनेशनों की बहुतायत में पाई जाने वाली सामूहिक उलझन के बीच, मैं धन्यवाद करता हूं कि मैं एक ऐसे समूह का भाग बन सकता हूं जो मसीह में मिलने वाली वास्तविक स्वतन्त्रता को जानता है।

यह वह समूह है जहां पर मुझ से मनुष्यों की बनाई किसी धर्म शिक्षा पर विश्वास करने, किसी मानवीय परम्परा को मानने या किसी प्रीस्ट या पुरोहित वर्ग का समर्थन करने के लिए नहीं कहा जाता। मुझे केवल बाइबल को मानने की छूट है। यह एक ऐसा समूह है जिसमें मुझे आराधना के किसी भी ऐसे रूप में, धार्मिक संगठन या धार्मिक परम्परा में भाग लेने को नहीं कहा जाता, जो स्वयं यीशु मसीह द्वारा अधिकृत न हो। मुझे केवल यीशु के पीछे चलने की छूट है।

यह ऐसा समूह है जिसमें मुझे ऐसी धार्मिक शिक्षाओं और नैतिक आचरण की, जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हों, संगति करने या उन्हें स्वीकृति देने की आवश्यकता नहीं है। मुझे अपने विवेक की बात मानने की छूट है जिसे पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के द्वारा अपने विश्वास के साथ किसी प्रकार का समझौता किए बिना संवेदनशील बनाया गया है। यह वह समूह है जिसमें मुझे अतीत की यथास्थिति या भविश्य के नये दर्शनों पर सवाल किए बिना मानने की आवश्यकता नहीं है। मुझे खुद बाइबल खोलकर यह पूछने की छूट है कि ''वचन क्या कहता है?''

यह ऐसा समूह है जिसमें मुझे किसी मानवीय संस्थान या डिनोमिनेशन से जुड़ने या उसे समर्थन देने की आवश्यकता नहीं है। मुझे मसीह की कलीसिया होने की छूट है जिसकी योजना परमेश्वर ने बनाई, जिसे यीशु मसीह ने बनाया, और जो पवित्र आत्मा से भरपूर हैं

मैंने मनुष्यों की बनाई धार्मिक जंजीरों को फैंक दिया है। मैंने प्रीस्ट या पुरोहित वर्ग के यीशु के द्वारा दबाव की जेल को तोड़ दिया हैं। मैंने अपने या दूसरों के मानवीय अनुभवों की गुलामी करने से इनकार कर दिया है।

मैंने मनुष्यों के बनाए धर्मों से स्वतन्त्रता की घोषणा जारी कर दी है और अपने आपको यीशु मसीह और केवल उसी के पीछे चलने के लिए दे दिया है। मैं परमेश्वर के अन्य बालकों की संगति में रहूंगा जो मेरी तरह मसीह की कलीसिया में एक दूसरे के साथ खून का रिश्ता रखते हैं।

स्व-शासन की उपयुक्तता

टॉम हॉलेंड

परमेश्वर की इच्छा, भली, स्वीकार्य और सम्पूर्ण है (रोमियों 12:3)।

कलीसिया अर्थात अपने उद्धार पाए हुओं लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा है कि अधिक से अधिक परिवार उसकी सेवा में संगठित हों। नये नियम का ध्यान से अध्ययन करने पर परमेश्वर की इच्छा को जाना जा सकता है।

परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन की जांच करने पर पता चलता है कि कुछ आधुनिक किस्म के कलीसिया के संगठनों में प्रमुखता से उनकी अनुपस्थिति पाई जाती है। नये नियम में आपको पोप के बारे में पढ़ने को नहीं मिलेगा। पर यह पढ़ने को मिलता है कि मसीह कलीसिया का सिर है (कुलुस्सियों 1:18)। पुरोहिततंत्र यानी प्रीस्ट के द्वारा कलीसिया का प्रबन्ध परमेश्वर की प्रकट की गई योजना में नहीं है बल्कि इसका आरम्भ मनुष्य ने ही किया। अध्यक्षता करने वाले बिशप, कॉनफ्रैंसों, धार्मिक कनवैंशनों का आरम्भ ईश्वरीय अधिकार के बिना मानवीय यत्नों से हुआ हैं

कलीसिया के संगठन के लिए परमेश्वर की योजना स्थानीय मण्डली के स्व-शासन को दिखाती है। फिलिप्पी की कलीसिया में बिशप और डीकन (फिलिप्पियों 1:1) थे। यह मण्डली मसीह के अधिकार के अधीन रहते हुए अपना प्रबन्ध आप करने वाली मण्डली थी।

निश्चय ही कलीसिया के संगठन के लिए परमेश्वर की योजना के लिए हम उसकी बुद्धि को सराहते हैं यदि किसी इलाके की मण्डली विश्वास से भटक जाए (बेदीन हो जाए)। तो किसी विशेष मण्डली के लिए **''भीड़ के पीछे चलने''** की आवश्यकता नहीं है।

मसीह की कलीसियाओं का कोई सांसारिक मुख्यालय नहीं है। परमेश्वर के लोगों की मण्डलियों और कहीं रहते हुए अध्यक्षता करने वाले किसी बिशप के अधीन नहीं हैं। धार्मिक संगठन जो प्रभु की कलीसिया के लिए ''नयेपन'' या नया रूप देने'' की नीति तय करने की जाने अनजाने में कोशिश करते हैं। ऐसा वे मसीह के अधिकार के बिना करते हैं।

हर मण्डली एक बार फिर से परमेश्वर की सेवा के लिए अपने आपको अर्पित कर

दे ताकि उसकी आराधना सच्चाई से हो सके और उद्धार का संदेश ईमानदारी से सुनाया जा सके। तब कलीसिया फिर से वैसे ही बढ़ेगी जैसे उस युग में बढ़ी थी जब परमेश्वर के लोग मण्डली के स्व-शासन से संतुष्ट थे।

यदि कोई पुरुष ही स्त्री को मण्डली में बोलने को कहे?

इस युग में स्त्रियों को लीडरशिप की भूमिका लेने के लिए अधिकृत करने के प्रयास में हर प्रकार के तर्क दिए जाते हैं।

यह मानते हुए कि पवित्र शास्त्र कहता है, पौलूस कहता है, ''कि स्त्री उपदेश न करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए'' (1 तीमुथियुस 2:12), पूछा जाता है, कि मण्डली के ऐल्डरों या पुरुषों को, स्त्रियों के ऊपर क्या अधिकार है। यदि कोई ऐल्डर स्त्री को मण्डली में प्रार्थना करने या प्रचार करने के लिए बुलाए, तो क्या इसकी अनुमति होगी? क्योंकि ऐसा होने पर वह तो केवल ऐल्डर के निर्देशकों को ही मान रही होगी।

मनुष्यों को देखने में लगता है कि इसमें कुछ गलत नहीं है। क्योंकि जब पुरुषों ने ही उसे प्रार्थना करने या उपदेश देने के लिए कहा हो तो इसमें स्त्री पुरुष पर अधिकार कैसे चला रही हो सकती है? परन्तु हमें यह बड़ी महत्वपूर्ण बात भूलनी नहीं चाहिए कि स्त्री का सिर पुरुष है और हर पुरुष का सिर मसीह है (1 कुरिन्थियों 11:3)। पवित्र शास्त्र आत्मा के अधिकार से लिखा गया था न कि किसी मानवीय लेखक के विचार से। जब उन्होंने लिखा कि पुरुष कलीसिया की सभाओं में अगुआई करें तो वे अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि वही लिख रहे थे जिसका निर्देश उन्हें पवित्र आत्मा ने दिया था। यानी ये शब्द उन लिखने वालों के नहीं थे।

कलीसिया में यदि आज कोई ऐल्डर या डीकन पुरुषों और स्त्रियों की मिलीजुली सभा में स्त्री से प्रार्थना करने या प्रचार करने के लिए कहे तो वह स्त्री को पवित्र शास्त्र के स्पष्ट निर्देशों को न मानने को कह रहा है। बेशक पुरुष होने के कारण वह स्त्री की अगुआई कर सकता है, परन्तु वह प्रभु के द्वारा दिए निर्देश से बढ़कर अपनी मर्जी नहीं कर सकता। ऐसा कहना वचन के विरूद्ध ढिठाई का पाप है और पवित्र शास्त्र में उसकी ज़ोरदार निंदा की गई है।

आमतौर पर इन निर्देशों को मानने से गड़बड़ी का आरंभ पारिवारिक तौर पर इकट्ठे होने के समय होता है। दो परिवार इकट्ठे खाना खा रहे होते हैं और एक आदमी वहां बैठी एक महिला को खाने के लिए धन्यवाद देने को कह देता है; या घर में प्रार्थना सभा के दौरान मिले-जुले लोग भाग ले रहे होते हैं जिनमें चेन प्रेयर में पुरुषों तथा महिलाओं दोनों से भाग लेने की अपेक्षा की जाती है। यह कलीसिया की सम्पूर्ण आराधना वाली सभा नहीं होती, इसलिए वे इसे पवित्र शास्त्र के स्पस्ट हवाले के बजाय व्यक्तिगत निर्णय पर छोड़ देते हैं।

परन्तु प्रार्थना का हर अवसर आराधनापूर्ण ही होता है और पुरुष के लिए किसी महिला को सब के सामने परमेश्वर के सिंहासन में अगुआई के लिए कहना वही ढीठपन है। परमेश्वर के सिंहासन के पुरुषों और स्त्रियों की मिली-जुली किसी भी मण्डली में स्त्री के नेतृत्व का न तो कोई उदाहरण है और न ही पवित्र शास्त्र में इसकी कोई अनुमति है। इस कारण ऐसा करने का हमारे पास कोई अधिकार नहीं है।

व्यवस्था की पुस्तक में हमें एक ऐसी ही परिस्थिति मिलती है। परमेश्वर ने कहा था कि यदि कोई नबी या स्वपन देखने वाला (जो अपने अधिकार को पवित्र शास्त्र से बढ़कर बताए; इस्राएलियों को भ्रमित करने का प्रयास करे, चाहे कोई चमत्कार या चिन्ह या अद्‌भुत काम करके दिखाए और कहे कि हम अन्य देवताओं के पीछे चलें और उनकी पूजा करें, तो तब तुम उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखने वाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिस से यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं वा नहीं? तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, और उसका भय मानना और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना। और ऐसा भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखने वाला तुम को तुम्हारे यहोवा से फेर के, तेरे परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहने वाला ठहरेगा, इस कारण वह मार डाला जाए... (व्यवस्थाविवरण 13:2-5)।

आज हम मूसा की व्यवस्था के अधीन या उस युग में नहीं रह रहे हैं, जिसमें परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ने वालों को दण्ड देने का अधिकार हो, परन्तु हमें जो वह कहता है उसे सुनने और केवल उसी की मानने के महत्व को कम नहीं करना चाहिए। किसी भी पुरुष या महिला द्वारा परमेश्वर के निर्देशों को फिर से लिखकर उसके ठहराए अधिकार के क्रम को बदलकर दूसरी बात सोचना, गंभीर अपराध है। बेशक कोई मसीही व्यक्ति, ऐसा पाप करने का अपराधी नहीं होना चाहेगा।

हम फरीसियों से क्या सबक ले सकते हैं?

सिसिल मेय

फरीसी लोग अपने समय के रूढ़ीवादी लोग होते थे। वे बाइबल को मानते थे। उनके नाम का अर्थ ही पाप और अशुद्धता से लगाव था। वे व्यवस्था को मानने में बड़े चौकस होते थे और अपनी धार्मिक परम्पराओं का पालन करने में बड़े निष्ठावान थे।

फिर भी यीशु ने उन्हें कई बातों के लिए डांटा। बहुत से फरीसी धर्म की बातें तो बड़ी अच्छी करते थे पर उनका पालन वैसे नहीं करते थे (मत्ती 23:2, 3), दूसरों का न्याय बड़ी कठोरता से करते थे और अपने आपको छोड़ देते थे (मत्ती 23:4) दूसरों को प्रचार करते थे परन्तु खुद इन बातों को नहीं मानते थे। और परम्पराओं को इतना अधिक मानते थे और दूसरों पर ऐसे थोपते थे जैसे वे परमेश्वर के नियम हो और परमेश्वर की

व्यवस्था के उलट होने पर भी उन्हीं को सम्मान देते थे (मत्ती 15:1-9)।

यीशु ने उनमें से कुछ पर दोष लगाया और उनसे कहा कि:

- वे जिसकी आज्ञा मान रहे होते थे उससे बढ़कर अपने ऊपर भरोसा करते थे। यीशु ने कुछ फरीसियों को एक दृष्टांत बताया। उसने उनसे जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा (लूका 18:9)। फरीसी ने अपने मन में प्रार्थना की (लूका 18:11)। उसने परमेश्वर के सामने इस बात की शेखी मारी कि वह क्या क्या करता है, मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं। उसे अपनी प्रार्थना से कुछ हासिल नहीं हुआ, क्योंकि उसने कुछ मांगा ही नहीं। उसे लगा कि उसे कुछ जरूरत नहीं है।
- वे व्यवस्था को उतना ही बताते थे जितना वे मान सकें। उपवास रखना, प्रार्थना करना और चंदा देना खास-खास बातें थीं और इनका पता चल सकता था। जितना वे संभाल सकते थे उतना ही वे बताते थे। दसमांश देने में उन्होंने पोदीने के पत्ते का हर दसवां और सौंफ के बीज का हर दसवां शामिल कर लिया था। ऐसा करके उन्होंने कोई गलती नहीं की। यीशु ने उन्हें बताया, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते (मत्ती 23:23)।
- वे कठिन भागों को छोड़ देते थे। उन्होंने न्याय और करुणा और विश्वास की बातों को निकाल दिया था (मत्ती 23:23)। वे नियमों को मानने में लग गए और लोगों को भूल गए।

हमें भी खबरदार रहना आवश्यक है। हम भी ऐसा कर सकते हैं क्योंकि बपतिस्मा अनुग्रह को परमेश्वर की पेशकश को मानने के हमारे जवाब का आवश्यक भाग है। हर रविवार के दिन-प्रभु-भोज, बिना बाज़ों के गाना, कलीसिया का प्रबंध मण्डली के द्वारा आवश्यक है। यदि हम परमेश्वर फिर कहता, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते।

परन्तु यदि हम इन बातों को करते हैं और हमें लगता है कि हमें अनुग्रह की आवश्यकता नहीं है और यदि हमें यकीन है कि केवल यही बातें हमें पापियों से अलग करती हैं, तो हमें, गंभीर बातों को याद रखना आवश्यक है। क्या हम वफादारी से करुणा दिखाते हैं? क्या हम अनाथों और विधवाओं से मिलते हैं, भूखों को खिलाते और कंगालों की सहायता करते हैं? क्या हम वह सारी भलाई करते हैं जो हम जानते हैं कि हमें करनी चाहिए? क्या हम हर भाई के साथ भाई की तरह सलूक करते हैं, उसकी चमड़ी का रंग चाहे जो भी हो? क्या हम बदसूरत लोगों से प्रेम करते हैं? क्या हम उन्हें क्षमा करने को तैयार हैं जो हमें कष्ट पहुंचाते या हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं? क्या हम पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करेंगे चाहे वह हम से अलग जाति या धर्म का हों?

यदि हम यीशु की बातों को मानें, तो शायद हम अधिक करुणामय और विश्वासी हो सकते हैं। कम से कम हमें यह प्रार्थना करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए कि हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।

क्या यह काफ़ी है?

सूज़ी फ्रैड्रिक

जब एक स्त्री यह समझ लेती है कि वह एक धार्मिक जीवन व्यतित कर रही है, तब यह स्वाभाविक है कि वह बाइबल की ओर देखती है कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है? उसे बहुत सारी ऐसी स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं जो धार्मिक थीं जैसे कि सारा, जिसका परमेश्वर में बहुत बड़ा विश्वास था, तथा मारथा और मरियम जो कि मेहमान नवाज़ी यानि आदर सत्कार करने में पीछे नहीं रहती थीं तथा यीशु और उसके चेलों की उन्होंने बहुत सेवा की थी। दोरकास ने पूरे जीवन भर लोगों की सहायता की तथा प्रिसकिल्ला सुसमाचार फैलाने में पौलूस की सहायता करती थी। बाइबल हमें यह भी सलाह देती है कि हमें अपने पतियों से प्रेम करना चाहिए तथा अपने बच्चों से प्रेम करना और उनकी अच्छी देखभाल करनी चाहिए। दूसरों को यीशु के विषय में बताना तथा सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए तथा इस सब में धीरज़ रखने की बहुत आवश्यकता है। संयम तथा उचित व्यवहार की भी बहुत आवश्यकता है। जो भी स्त्री ऐसा करेगी उसके परिवार में प्रसन्नता होगी। परन्तु क्या यह सब करने से वह अनन्त जीवन, जो कि स्वर्ग में मिलेगा, उसको भी प्राप्त करेगी?

बाइबल का नया नियम हमें बताता है कि कोई भी व्यक्ति अनन्त जीवन को कमा नहीं सकता। यदि कोई व्यक्ति एक हज़ार अच्छे या भले कार्य कर ले या तीर्थ यात्राएं कर लें तौ भी वह अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकता। (इसके लिये देखिये-तीतुस 3:5; इफिसियो 2:4-10)। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह यीशु के द्वारा हमें पापों से मुक्ति दे सकता है, ''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियो 6:23)। जब हम विश्वास करके बपतिस्मे के द्वारा यीशु को अपने आप को सौंप देते हैं, तब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं'' तथा हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। (प्रेरितों 2:38; गलतियों 3:26-27)। हमारे बपतिस्मे के पश्चात जब हम निरन्तर परमेश्वर की आराधना करते तथा उस पर भरोसा रखकर उसकी सेवा करते हैं, तब उसका अनुग्रह हमारे पापों को लगातार क्षमा करता रहता है। (1यूहन्ना 1:7)।

मसीही बन जाने के पश्चात हमें उन बातों को करते रहना चाहिए जो धार्मिकता से जुड़ी हुईं हैं ताकि हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें। यदि हम पापों से उद्धार पाना चाहते हैं तथा अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं तब हमें यीशु में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। (यूहन्ना 3:3-5; मरकुस 16:15-16, 2 थिस्सलुनीकीयों 1:8; प्रेरितों 2:38)। मेरा आपसे यह आग्रह है कि आप अपनी बाइबल को पढ़िये तथा खोजिये कि परमेश्वर की इच्छा आपके लिये क्या है? आज मनुष्य के लिये केवल एक ही आशा है और वो है प्रभु यीशु मसीह तथा उसका सुसमाचार (रोमियों 1:16)।